ROHTAS MAHILA COLLEGE SASARAM
Department of- History - Subsidiary
20-05-2020 B.A.I [2019-20]
Dr. Satyajeet Saraang [Notes]

[1.] स्वर्णयुग :- सांस्कृतिक उपलब्धियों के आधार पर अनेक विद्वानों ने गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग, हिंदू पुनर्जागरण का काल एवं राष्ट्रीयता के पुनरुत्थान का युग माना है।

⇒ जब गुप्त राजाओं ने भारत में पुन: राजनीतिक एकता स्थापित की, विदेशियों को पराजित किया, प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की, धर्म कला और साहित्य तथा ज्ञान-विज्ञान को प्रोत्साहन दिया।

गुप्तयुग वास्तव में स्वर्ण युग था। गुप्तयुग अगर स्वर्णयुग था, तो उत्तरी भारत के उच्च वर्गवालों के लिए साधारण जनता तो अभावों और कठिनाइयों से ग्रसित थी। यह हिंदू-पुनर्जागरण का युग भी नहीं था।

हिंदू शब्द का व्यवहार अरबों ने गुप्तयुग के पश्चात भारतीयों के लिया किया। गुप्तयुग की मूर्तिकला पर बौद्धधर्म का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है।

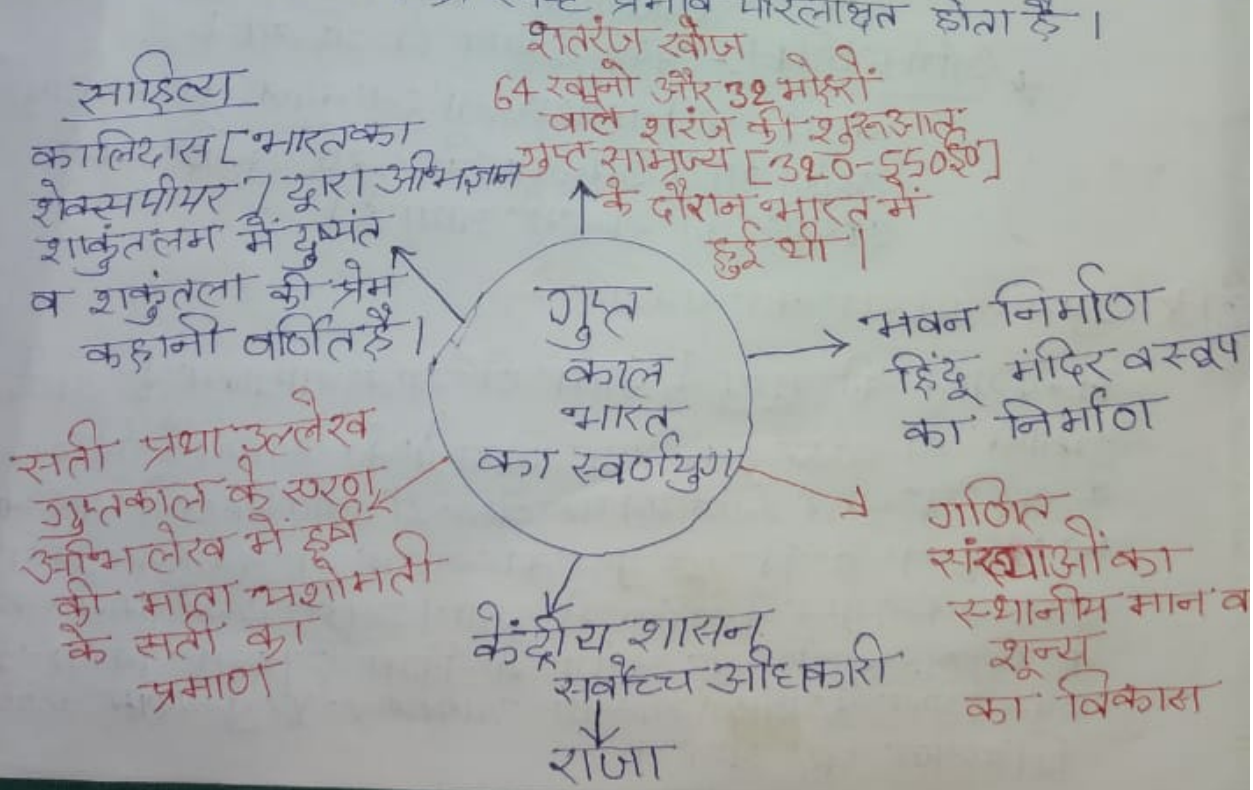

कला एवं साहित्य

★ वास्तुकला :— कला और साहित्य के विकास की दृष्टि से गुप्त काल को भारतीय इतिहास का क्लासिकी युग अथवा स्वर्णयुग कहा गया है।
गुप्तकाल में ही मंदिर निर्माण काल का जन्म हुआ था। जैसे में, देवगढ़ का दशावतार मंदिर [वैष्णव मंदिर] शिखर युक्त मंदिरों का निर्माण गुप्तकाल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।
इस काल के मंदिरों के निर्माण में छोटी-छोटी ईंटों तथा पत्थरों का प्रयोग किया जाता था।

★ साहित्य :— पुराणों की जो रूप अब प्राप्त होता है। उसकी रचना गुप्तकाल में हुई।

★ दास :— गुप्त काल में दास प्रथा विद्यमान थी। नारद ने 15 प्रकार के दासों का उल्लेख किया है जबकि मनु ने सात प्रकार के।

★ स्त्रियों की दशा :—
(i) स्त्री शिक्षा का प्रचलन था।
(ii) गुप्तकालीन साहित्य एवं कला में नारी का आदर्शमय चित्रण है परन्तु व्यावहारिक रूप में उनकी स्थिति पहले की

★ आर्थिक जीवन :— अपेक्षा दयनीय हो गई थी।
कपड़े का निर्माण करना इस काल का सर्वप्रमुख उद्योग था। अमरकोष में कताई, बुनाई, धागे, इत्यादि का सन्दर्भ आया है।

[4] ★ गुप्त साम्राज्य का पतन :—

स्कन्दगुप्त की मृत्यु के साथ ही गुप्त साम्राज्य के अच्छे दिन समाप्त हो गए। कतिपय विद्वानों की धारणा है कि स्कन्दगुप्त के बाद पुरुगुप्त सिंहासन पर बैठा डॉ० पी० सिन्हा ने सफलतापूर्वक सिद्ध किया है कि पुरुगुप्त का राज्य तो कुमारगुप्त प्रथम और स्कन्दगुप्त के बीच में हुआ। इसकी चर्चा हमने स्कन्दगुप्त के सिंहासनारोहण के प्रसंग में किया है। इनके विचार में स्कन्दगुप्त के बाद सारनाथ अभिलेख का कुमारगुप्त द्वितीय सिंहासन पर बैठा।